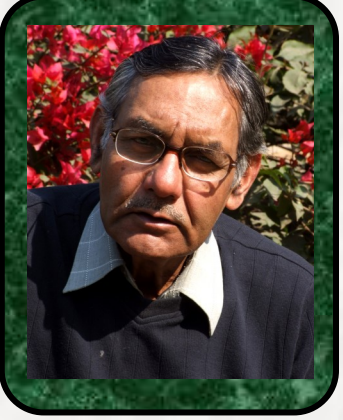

# विज्ञान व्रत

## ग़ज़ल

जो सदा से लामकाँ है
वो मुझे रखता कहाँ है

ख़ुद नहीं महफ़ूज़ है जो
क्यों हमारा पासबाँ है

तू अगर मंज़िल नहीं तो
फिर मुझे जाना कहाँ है

मिल चुका हूँ आपसे पर
आपको देखा कहाँ है

आप बोलें या न बोलें
आपका चेहरा बयाँ है

चेहरे पर मुस्कान रखूँ
क्यूँ फ़ानी पहचान रखूँ

जो तेरा अरमान रखूँ
ऐसी क्या पहचान रखूँ

पहचानूँ इस दुनिया को
पर ख़ुद को अंजान रखूँ

खो जाऊँ पहचानों में
क्यूँ इतनी पहचान रखूँ

मैं हूँ, मन है, दुनिया भी
अब किस-किसका ध्यान रखूँ

उनके पास रहा करता हूँ
अपने साथ दिखा करता हूँ

जब-जब मौन रहा करता हूँ
उनसे बात किया करता हूँ

कोई पूछे क्या करता हूँ
बस उनको सोचा करता हूँ

ख़त में जो तहरीर नहीं है
उसको रोज़ पढ़ा करता हूँ

वो नाज़िल हैं मुझ पर वरना
मैं कौन? भला क्या करता हूँ

 ISSN:2583-8849